

कैंसर का इलाज व्यक्तिगत स्तर पर देना चाहिए : डॉ. जमील

कैंसर के लिए मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक्स समाधानों पर चर्चा

इंदौर, 8 फरवरी. जेनोमिक्स आधारित डायग्नोस्टिक्स और शोध में अग्रणी कंपनी, मेडजिनोम और सेंट्रल लैब्स, इंदौर ने सॉलिड ट्यूमर्स में मॉलिक्यूलर बायोमार्कर्स खोजने और इसकी चुनौतियों व एचएलए (ह्यूमन ल्यूकोसाइट एंटीजेंस) टाईपिंग व शिमरिज्म में नए फ्रंटियर्स पर एक वार्ता का आयोजन किया. इस सिंपोसियम में डॉ. सक्तिवेल मुरुगन एसएम, एसोशिएट डायरेक्टर- डायग्नोस्टिक्स, मेडजिनोम और डॉ. जमील अहमद खान, सीनियर साईटिफिक अफेयर्स मैनेजर, मेडजिनोम के द्वारा चर्चा की गई. इसमें शहर के अग्रणी ऑन्कोलॉजिस्ट, हीमेटोलॉजिस्ट, जनरल फिजिशियंस और चेस्ट फिजिशियंस ने हिस्सा लिया.

मेडजिनोम के सीनियर साईटिफिक अफेयर्स मैनेजर, डॉ. जमील अहमद खान ने सॉलिड ट्यूमर्स के लिए क्लिनिकल डिजीजनमेकिंग में

सुधार करने के लिए मॉलिक्यूलर डायग्नोस्टिक्स समाधानों के बारे में कहा कि कैंसर के लिए डायग्नोसिस और उपचार की विधियां तेजी से बदल रही हैं. अत्यधिक संवेदनशील मॉलिक्यूलर टेक्नॉलॉजीज जैसे क्रांटेटिव पीसीआर, कैपिलरी इलेक्ट्रोफोरेसिस और नेक्स्ट जनरेशन सीक्वेंसिंग के क्रियान्वयन ने प्रदर्शित किया है कि कैंसर काफी जटिल बीमारी है, जिसमें सेल के अंदर विभिन्न जीन्स और रेगुलेटरी पाथवे बिगड़ जाते हैं. ये त्रुटियां हीटरोजिनस भी होती हैं, जो हर जगह के लिए अलग होती हैं या एक व्यक्ति से दूसरे में बदल जाती हैं. अब इस बात को सभी ने स्वीकार कर लिया है कि हर व्यक्ति का कैंसर दूसरे से अलग होता है और उसे व्यक्तिगत स्तर पर जाकर ही इलाज देना चाहिए. इससे न केवल नई दवाइयों का विकास हुआ है, जो विशेष मॉलिक्यूलर कमियों का इलाज करती हैं, बल्कि समय पर जांच व निदान और कस्टमाइज्ड इलाज तथा इलाज की प्रभावशीलता मापते हुए रियल टाइम मॉनिटरिंग के लिए अत्याधुनिक

जांचों का भी विकास हुआ है.

पूर्व अनुमान लगाना भी संभव - डॉ. जमील ने आगे कहा कि इन दिनों कैंसर का इलाज पहले से ज्यादा सफल हो रहा है, जिसके साईड इफेक्ट भी कम हैं, बचने व इलाज की संभावना ज्यादा है. कुछ मामलों में ज्यादा जोखिम वाले लोगों में उनके जीवन की कमी के चलते जांच में कैंसर होने की संभावनाओं का पूर्व अनुमान लगाना भी संभव हो गया है.

प्रत्यारोपण कई चीजों पर निर्भर - डॉ. सक्तिवेल मुरुगन एसएम, एसोशिएट डायरेक्टर- डायग्नोस्टिक्स, मेडजिनोम ने एचएलए (ह्यूमन ल्यूकोसाइट एंटीजेंस) टाईपिंग स्ट्रेसिंग के बारे में बताया कि सफल प्रत्यारोपण कई चीजों (अंग, बीमारी, स्टेज, उम्र, इलाज की दिनचर्या आदि) पर निर्भर है. लेकिन मरीज एवं डोनर के बीच एचएलए कॉम्पैटिबिलिटी बोन मैरो ट्रांसप्लांट, हार्ट/लिवर ट्रांसप्लांट और ग्राफ्ट-वर्सेस-होस्ट डिजीज (जीवीएचडी) आदि के मामले में बहुत महत्वपूर्ण है.